स्वामित्वः अपेम पेट्रॉन टीम

Reg. No. :2020/BAR/80/BK/01

अपेम लाइव न्यूज

(अपेम ट्रस्ट के अंतर्गत संचालित व प्रसारित)

संपर्क सुत्र-
7004315535
7004704981
9431140260

सप्ताहिक डिजीटल न्यूज पोर्टल

प्रकाशन वर्ष 2021 | खबर ही नही , बल्कि खबरों का विश्लेषण भी | दिनांक -18/07 2021 अंक - 08

बरही से प्रकाशित एवं प्रसारित

बरही का इतिहास : डीवीसी, विस्थापन, प्रदान संस्था से जुडे एक कर्मी की कहानी

डीवीसी विस्थापितों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में प्रदान संस्था से जुडे रामकिशोर प्रसाद ने निभाई थी अहम भूमिका

दामोदर महिला मंडल के माध्यम से स्वयं सहायता समूह बनाकर उनहे रोजगार से जोडा, महिला शक्ति की दिलाई पहचान, लगातार 20 वर्षो तक दी सेवा, उनकी कर्तब्यनिष्ठा, इमानदारी एवं कार्य के प्रति वफादारी के कायल थे लोग

अपेम लाइवः बरही
कृष्णा प्रजापति

कृष्णा प्रजापति

जब डीवीसी के द्वारा तिलैया डैम का निर्माण हुआ था। उस समय लगभग 56 मौजा के लोग विस्थापित हुए थे। लगभग 50000 की आबादी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुई थी। विस्थापितो के बीच रोजी रोटी एवं आश्रय की समस्या उत्पन्न हो गई थी। कोई उनके समस्या के समाधान के लिए आगे नही आ रहा था। डीवीसी के माध्यम से बिजली उत्पादन का कार्य तो शुरू हुआ । लेकिन विस्थापितो की जीवन स्तर में कोई सुधार नही हुआ। विस्थापित लोग एक ऐसे रहनुमा की तलाश में थे। जो उनके दुख दर्द को समझ सके। उनके पुनर्वास के लिए कोई सोचे। उनके जीवन स्तर में सुधार करने के लिए प्रयास करे। उनकी समस्या के समाधान के प्रति गंभीर हो। ऐसे ही समय में सन 1989 में **प्रदान** नामक संस्था का बरही क्षेत्र में आगमन हुआ। जिसमें प्रदान से जुडे सुमेन विश्वास, नरेंद्रनाथ, जूही गुप्ता, सत्यरंजन एवं रामकिशोर प्रसाद ने विस्थापितों के जीवन स्तर में सुधार लाने का बीडा उठाया। लेकिन इनके मिशन को धरातल पर उतारने एवं विस्थापितों के बीच एक मुख्य सारथी की भूमिका एक सख्सियत ने निभाई। जिनका नाम है रामकिशोर प्रसाद जी। आज हम इसी सख्सियत से आपको रूबरू कराना चाहते हैं।

स्वयं सहायता समूह की बैठक (फाइल फोटो)

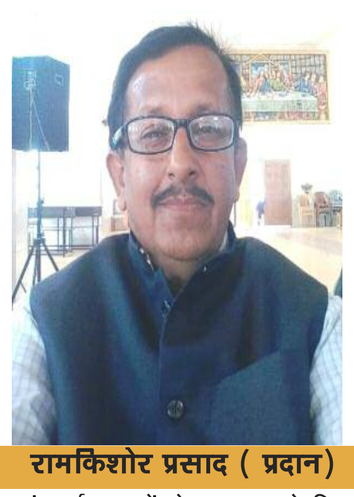

रामकिशोर प्रसाद (प्रदान)

महिलाओं को प्रशिक्षित करते रामकिशोर प्रसाद(फाइल फोटो)

कैसे हुआ था काम शुरूः प्रदान संस्था जब 1989 में बरही में स्थापित हुई, उस समय सबसे पहली चुनौती थी। विस्थापितों में विश्वास जगाने की। इसकी कमान रामकिशोर जी ने ही संभाली। स्थानीय समाजिक कार्यकर्ताओं से संपर्क कर एक दामोदर महिला मंडल के नाम पर एक स्थानीय संगठन बनाया। जिसमें सुरेंद्र मोदी,रंजु सिंह, पूनम सिंह सहित लगभग एक दर्जन लोगों का साथ लिया। स्थानीय लोगों के सहयोग से बरही, चौपारण, पदमा, तिलैया में स्वयं सहायता समूह का गठन कर उनका पोषण का कार्य शुरू हुआ। धीरे धीरे कारंवा बढता गया और महिलाओं की एक बडी फौज खडी हो गई। हलांकि राजनीति से जुडे लोग इस मुहिम में डिस्टर्ब करने का प्रयास भी किया। लेकिन रामकिशोर जी ने हिम्मत नही हारी। शुरूआती दौर में इनके डराने धमकाने का प्रयास भी किया गया। लेकिन स्थानीय लोगों के सहयोग से अपना काम करते चले गए। प्रदान के वित्तीय सहयोग से महिलाओं को प्रशिक्षित कर उनमें बचत की भावना पैदा किया। 10 रूपए सप्ताहिक जमा करने की आदत डलवाई। उसी बचत से मामूली ब्याज पर आपस में कर्ज लेने की परंपरा शुरू हुई। विस्थापितों के साथ साथ आस पास के गांव के लोग भी इनसे जुडने लगे। जब कुछ महिलाओं में जागृति आई। तब उनहे बैंक से जोड कर वित पोषण काराया गया। जिसका काफी लाभ उनहे मिला। जब लोगो में बचत की भावना बढी। तब उनहे आधुनिक तकनीक से खरीफ, रबी एवं गर्मा फसलों के उत्पादन के लिए प्रेरित किया गया। सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं से संपर्क कर हजारो महिला पुरूषों को एक्सपोजर विजिट कराया गया। उनहे नई तकनीक की जानकारी दी गई। खेती बाडी के लिए प्रेरित किया गया। जिसका परिणाम रहा कि विस्थापितों के जीवन स्तर में सुधार होने लगा। धीरे धीरे महिलाओं को गाय पालन, बकरीपालन, मुर्गी पालन, जलछाजन से जोडा गया। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुई। हलांकि पूरे कार्यकम में प्रदान से जुडे अन्य कार्यकर्ताओं का भी योगदान रहा। लेकिन रामकिशोर जी का योगदान अविस्मरणीय रहा। लगभग 20 वर्षो तक बरही, चौपारण पदमा एवं आस पास के लोगो को जीवन जीने की कला सिखाया। उनकी आर्थिक सुधार में अपनी महती योगदान दिया। आज बरही क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहो की जो पहचान है। उनमें प्रदान संस्था का ही अहम रोल है। जिनके सारथी रामकिशोर प्रसाद जी रहे थे। बरही से स्थानंतरण के बाद आज भी महिलाओं एवं विस्थापितों के जेहन में रामकिशोर जी का नाम जरूर आता है। आज भी प्रदान बरही में काम कर रहा है। लेकिन उनके जैसा कर्तब्यनिष्ठ, इमानदार व्यक्तित्व की कमी देखने को मिल रहा हैा चाहे जो हो, लेकिन प्रदान संस्था एवं दामोदर महिला मंडल के माध्यम से रामकिशोर जी ने बरही के विस्थापितो के लिए जो कुछ किया, उन्होने जो लकीर खीच गए उसे बरही के इतिहास में याद रखा जाएगा।

कभी बरही चौक की सुंदरता देखते बनती थी, दूधिया रोशनी से प्रकाशयमान रहता था बरही, अब लगा ग्रहण

स्ट्रीट लाइट खराब, संकेतक लाइट क्षतिग्रस्त,बरही चौक पर गंदगी का अंबार, आखिर कौन है जिम्मेवार,कब मिलेगा बरही चौक का तारणहार

अपेम लाइवः बरही
सोनू पंडित

सोनू पंडित

तीन तीन नेशनल हाइवे पर स्थित बरही चौक अपने झारखंड में ही नही बल्कि राष्ट्रीय मानचित्र पर भी अपना एक विशेष स्थान रखता है। बरही चौक कोलकता, दिल्ली, पटना एवं रांची महानगर को जोडता है। प्रतिदिन बरही चौक से हजारो वाहन गुजरते हैं। हजारो यात्रियों का आवगमन होता है। लेकिन वर्तमान में जो स्थिति है। उससे बरही चौक की छवि धूमिल हो है। बरही चौक के चारो ओर गंदगी का अंबार है, महिनो ने स्ट्रीट लाइट टूटी पडी है, संकेतक लाइट एक सप्ताह से टूटा पडा है । नो पार्किंग की बोर्ड मानो चिढा रहा हो। क्योंकि जहां बोर्ड लगा हुआ है। वहीं अतिकमण कर लोग अपना व्यवसाय शुरू कर दिया। प्रशासन पुलिस की कोई भय नही है। बरही के सौन्दर्यीकरण का मानो ग्रहण लग गया। इसलिए सवाल उठना लाजिमी है कि आखिर इस स्थिति परिस्थिति का जिम्मेवार कौन है। किनकी जिम्मेदारी बनती है। कौन इस बरही चौक का तारणहार बनकर आएगा। हलांकि जो बदतर स्थिति अभी है। वह स्थिति सात साल पहले नही थी। तत्कालीन विधायक मनोज कुमार यादव एवं वर्तमान सांसद जयंत सिंन्हा के प्रयास से लगभग चार करोड की लागत से बरही चौक का सुन्दीकरण किया गया। धनबाद रोड एवं गया रोड में एनटीपीसी के वित्तीय सहयोग से डिवाइडर पर स्टीट लाइट लगाई गई। जिस वक्त यह पूरी व्यवस्था की गई थी। उस समय बरही चौक की सुंदरता देखते बनती थी। दूधिया रोशनी से मानो ऐसा लगता था जैसे कोई बडा टाउन है बरही। लेकिन देख भाल के अभाव एवं बरही चौक की सौन्दयीकरण में बरती गई अनियमितता के वजह से सौन्दयीकरण की प्रकाश धूमिल होता चला गया। धनबाद रोड की स्टीट लाइट का पोल टूटकर पिछले एक साल से यू ही पडा हुआ है। कोई देखने वाला। कई पोल तो अपने नियत स्थान से गायब भी हो गया। तार वैसे ही झूल रहा है। लाइट जलता ही नही है। वही स्थिति गया रोड की डिवाइडर की भी हैं। बरही चौक के आस पास गंदगी से उसकी सुंदरता की पोल खोल रही है। हलांकि तत्कालीन एसडीएम डॉ कुमार ताराचंद के द्वारा स्वच्छता के लिए पहल भी किया गया था। लेकिन स्थानीय लोगों का सर्पोट नही मिलने के वजह से अभियान कुछ दिन के बाद स्वतः बंद हो गया और फिर वही बरही चौक अपनी पुरानी स्थिति में लौट आया। धनबाद रोड के डिवाइडर के शुरू में ही सौर उर्जा संचालित संकेतक लाइट लगाया गया था। किसी वाहन के द्वारा इसे क्षतिग्रस्त कर दिया गया। अभी संकेतक उसी स्थिति में गिरी पडी हुई है। किसी का ध्यान उस पर नही है। हलांकि प्रशासनिक एवं जन प्रतिनिधियों की नजर रोज उस पर पडती है। लेकिन किसी के द्वारा पहल नही की गई। बरही चौक की गरिमा को वापस लाने के लिए स्थानीय प्रशासनिक पदाधिकारियों एवं सांसद विधायक के अलावे पंचायत प्रतिनिधियों को इस ओर ध्यान देनी चाहिए। ताकि बरही चौक को राष्ट्रीय ही नही अंतराष्ट्रीय पटल पर भी सोहरत हासिल हो और हम बरही वासी गौरन्वित महसूस कर सकें। अब देखना है कि बरही चौक को कब मिलेगा उनका तारणहार ।

वर्षो से टूटा पडा धनबाद रोड में स्ट्रीट लाइट का पोल

एक सप्ताह से टूटा पडा हे बरही चौक का संकेतक लाइट

बरही चौक का हाल, गंदगी का अंबार, कौन है जिम्मेवार, स्थायी समाधान कब तक ?

पासवान टोला से बखरिया सडक पर बहता है नाली का गंदा पानी,राहगीरों को आवागमन में हो रही है परेशानी,

अपेम लाइवः बरकट्ठा
बैजनाथ महतो

गोरहर पंचायत के अंतर्गत पासवान टोला से लेकर बखारिया सड़क पर नाली का गंदा पानी सालो भर बहते रहते हैं । यहां की गांव की सरकार और यहां के जनप्रतिनिधि ध्यान दे इसके लिए कई बार बैठक की गई। महिला एवं पुरुष दोनों इसके विरोध में रैलियां भी निकाली । तब भी किसी जन प्रति. निधि के कान में जूं तक नही रेंगा। घर का पानी सड़क पर बहने से सडक कीचड़ में तब्दील होता रहता हैं। स्थानीय निवासी एवं स्कूली बच्चों को आने जानें परेशान हो रही हैं। यहां के कई लोगों का हाथ पैर कीचड में गिरने से टूटते रहे हैं। कीचड़ पर ज्यादा मच्छर के ढेर पनपते जा रहे है । मच्छर काटने से मलेरिया बीमारी हो रही है। गरीब लोग इस से भी डरते हैं एवं गिरने से भी डरते हैं। निकासी की व्यवस्था नहीं होने के कारण से लोग सड़क पर पानी बहाते है । यदि नाली बना दिया जाए तो नाली का पानी बाहर सड़क पर जाने से बच पाएगा ।सरकार के द्वारा स्वच्छ भारत अभियान का दंभ भरा जाता है। लेकिन गोरहर पंचायत के पासवान टोला की सडक की स्थिति देख नही लगता कि गांव तक स्वच्छ भारत अभियान पहुंचा है। अभी भी लोग स्वच्छता को लेकर जागरूक नही है। इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है।

अपेम ट्रस्ट का बढता कदम

एडिटिंग एवं पेज मेकिंग : कृष्णा प्रजापति

निर्देशन : कपिल केशरी एवं डॉ अनिल कुमार

देश के विकास में सबसे बडी बाधक है अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि : डॉ संगीता चौधरी

कठोर जनसंख्या नियंत्रण कानून की है जरूरत,तभी देश बन पाएगा विश्व महाशक्ति, शिक्षा एवं कौशल विकास को देना होगा बढावा

अपेम लाइव : बरही
उमा गिरी

उमा गिरी

आज बढती जनसंख्या पर लोग सोचना शुरू कर दिया है। अधिकतर लोग बढती जनसंख्या को अभिशाप मानते हैं। इस बारे में शकुंतला शरण मेमोरियल ट्रस्ट की अध्यक्षा एवं आरएनवाइएम कॉलेज की व्याख्याता डॉ संगीता चौधरी का क्या मंतब्या है। आइए जानते हैं।

किसी भी देश का विकास उस देश की नियंत्रित जनसंख्या पर निर्भर करता हैं साथ ही यह भी निर्भर करता है कि उस देश की शिक्षण व्यवसथा, कौशल विकास की स्थिति कैसी है। यदि शिक्षा एवं कौशल विकास के मामले में देश अव्वल रहा तो जनसंख्या वृद्धि का कोई गंभीर मामला सामने नही आएगा। क्योकि एक शिक्षित व्यक्ति जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न होने वाली प्रतिकूल प्रभाव को भली भांति समझता है। उसे नियंत्रित करने के लिए उनके द्वारा हर वो उपाय किया जाता है जो जरूरी एवं उनके एवं उनके देश के हित में है। वहीं कौशल के विकास से भी रा. जगार श्रृजन होगा। बेरोजगार की समस्या कम होगी। जब लोगो को रा. जगार मिलेगी, तब वह अपनी जीवन स्तर को सुधार पाएगा। लेकिन किसी भी देश के विकास में जो मूल मापदंड है वहीं अपने देश भारत में कम दिख रहा है। इसका मुख्य कारण देश की अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि है। यही वजह है कि भारत की जनसंख्या में अनियंत्रित वृद्धि सारी समस्याओं का मूल कारण बनी हुई है। गरीबी, बेरा. जगारी, अशिक्षा, अपराध वृद्धि तनाव, असुरक्षा, सभी जनसंख्या वृद्धि के ही परिणाम हैं। इस मामले में सरकार की प्रयास नकाफी है।

हम अपने देश को विश्व की महाशक्ति बनाने की सपने देख रहे हैं। लेकिन यह सपना तभी पूरा होगा। जब हम जनसंख्या को नियंत्रित कर पाएंगे। जनसंख्या को नियंत्रित कर ही हम देश की आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकते हैं।

डॉ संगीता चौधरी

जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम : जब किसी समाज के सदस्यों की संख्या बढ़ती है तो उसे उनके भरण पोषण के लिए जीवनोपयोगी वस्तुओं की भी आवश्यकता पड़ती है। उत्पादन तथा जनसंख्या वृद्धि में संतुलन न होने से जनसंख्या आगे चलने लगती है, फलस्वरूप जनसंख्या वृद्धि आगे आगे दौड़ती है और पीछे पीछे उत्पादन वृ।. जनसंख्या और उत्पादन दर में चोर सिपाही का खेल शुरू हो जाता है। जिसका परिणाम प्रत्येक व्यक्ति के विकास पर पडती है।

वास्तविकता यह है कि उत्पादन वृद्धि के सारे लाभ को जनसंख्या की वृद्धि व्यर्थ कर . देती है। आज हमारे देश में यही हो रहा है। जनसंख्या वृद्धि सारी समस्याओं की जननी है। बढ़ती महँगाई, बेरोजगारी, कृषि भूमि की कमी, उपभोक्ता वस्तुओं का अभाव, यातायात की कठिनाई सबके मूल में यही बढ़ती जनसंख्या है। लेकिन अब सवाल उठता है कि आखिर अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धिका उपाय क्या है। हम उसे कैसे नियंत्रित कर सकते हैं।

नियंत्रण के उपाय:–

आज के विश्व में जनसंख्या पर नियंत्रण रखना प्रगति और समृद्धि के लिए अनिवार्य जरूरत महसूस की जा रही है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए जनसंख्या नियंत्रण परम आवश्यक है। जनसंख्या पर नियंत्रण के अनेक उपाय हो सकते हैं। वैवाहिक आयु में वृद्धि करना एक सहज उपाय है। बाल विवाहों पर कठोर नियंत्रण होना चाहिए। दूसरा उपाय, छोटा परिवार को बढावा देना है।

हलांकि परिवार नियोजन के अनेक उपाय आज उपलब्ध हैं।लेकिन जागरूकता के अभाव में लोग रूचि नही लेते हैं। इसके लिए जरूरी है कि राजकीय सुविधाएँ केवल परिवार नियोजन का पालन करने वालों तक सीमित किया जाए। परिवार नियोजन अपनाने वाले व्यक्तियों को वेतन वृद्धि देकर, पुरस्कृत करके तथा नौकरियों में प्राथमिकता देकर भी जनसंख्या नियंत्रण को प्रभावी बनाया जा सकता है। अति. रिक्त शिक्षा के प्रसार द्वारा तथा धार्मिक और सामाजिक नेताओं का सहयोग भी जनसंख्या नियंत्रण में सहायक हो सकता है। वहीं जनसंख्या नियंत्रण का कानून बनाकर भी हम जनसंख्या वृद्धि को रोक सकते हैं। जो आज यूपी एवं असाम में देखा जा रहा है। इसी तरह की कानून की जरूरत पूरी देश को है। क्योकि जनसंख्या की अनियंत्रित वृद्धि खतरे की घंटी है। यह विस्फोटक बनकर राष्ट्र के कुशलक्षेम को निगल जाएगा। , उससे पहले ही इस समस्या का गम्भीरता से निराकरण होना चाहिए। आज संसार में संख्या बल नहीं, अर्थ और वृद्धि बल से ही सफलता प्राप्त होती है। भारत को एक समृद्धि और शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने के लिए जनसंख्या की असीमित वृद्धि को यथाशीघ्र नियंत्रित करना चाहिए। यह तभी संभव है जब हम हम अपना स्वार्थ त्याग कर देश के विकास के बारे में सा. चना शुरू करेंगे। जनसंख्या नियंत्रण कानून का सर्पोट करेंगे। गांव गांव में जागरूकता फैलाएंगे।

कोरोना का खतरा अभी टला नही है: अपने बरही को अपने हाथों से सवारें तथा करोना की संभावित तीसरी लहर से अपनों को बचाएं

बरही में नही दिख रहा है कोरोना का भय, न ही मास्क का प्रयोग, न ही सोशल डिस्टेसिंग की चिंता

अपेम लाइवः बरही
धनंजय कुमार

धनंजय कुमार

बरही क्षेत्र मे इन दिनों जबरदस्त लापरवाही देखी जा रही है। सभी लोग कोरोना से दूरी बनाना चाहते हैं पर लोगों से दूरी बना कर रखना कोई पसंद नहीं करते हैं। अब सोशल डिस्टेंसिंग को लेकर कहीं भी लोग सजग दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। परिवार सहित वाहन पर यहां से वहां यात्रा, बाजार व होटलों में भीड़, बैंक व शासकीय कार्यालयों में भीड़, मीटिंग व प्रदर्शन जैसे आयोजन बड़ी बेपरवाही से हो रहे हैं।

अधिकतर लोग मास्क का प्रयोग नहीं कर रहे हैं।

सबसे बड़ी समस्या है कि लोग एक दूसरे को देखकर मास्क का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। कुछ लोग यदि मास्क लगाकर निकलते हैं और दूसरों को बिना मास्क लगाए देखते हैं तो वह अपनी भी मास्क को उतार लेते हैं। लोग अब मास्क लगाना भी जरूरी नहीं समझ रहे। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन और मास्क लगाए जाने को लेकर पहले प्रशासन जितनी सजग थी अब उतनी नहीं है। नतीजा संक्रमण की रोकथाम के प्रति लोगों की लापरवाही या बढ़ती जा रही है।

टीकाकरण केंद्रों में भी भीड़ भाड़ से संक्रमण का खतरा:–

अस्पताल में भी कोई पालन कराने वाला नहीं – जिस जगह पर कोरोना संक्रमण का सबसे ज्यादा खतरा है वहां भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराने वाला कोई नहीं है। अस्पताल में भी वैक्सीन रजिस्ट्रेशन काउंटर के सामने तथा टीकाकरण के लिए लंबी लाइन लग रही है। कतार में खड़े लोगों को यह तक एहसास नहीं है कि यदि लाइन में कोई कोरोना संक्रमित खड़ा है तो उसके जरिए वे हुए भी संक्रमित हो सकते हैं।

यातायात में लापरवाही :–

रिश्तेदारों के घर आना जाना – कोरोना काल में लोगों को अपने घर में रहने की सलाह दी जा रही है पर लोग छोटे–छोटे कार्यक्रमों में भी रिश्तेदार के घर परिवार सहित जाना नहीं छोड़ रहे हैं। पूरे परिवार के साथ यात्राएं करते हुए कई लोग सड़क पर देखे जाते हैं। बसों में भी जरूरत से ज्यादा यात्रियों को बैठाया जा रहा है। बसों में भी बिना मास्क के यात्रियों द्वारा यात्रा किया जा रहा है।

बाजारों/दुकानों में सोशल डिस्टेंसिंग की आवश्यकता:–

सोशल डिस्टेसिंग की धज्जियां उडाता बरही की तस्वीर

बाजार में भीड़ – शहर सहित ग्रामीण इलाकों के बाजार में सब्जी व खाद्य पदार्थों के साथ हर तरह की दुकानें लग रही हैं। बाजार में पहले ही की तरह लोगों की भीड़ जुट रही है। और यहां सोशल डिस्टेंसिंग का नामोनिशान नहीं है। यहां तक कि लोग बाजार की भीड़ में बगैर मास्क के घूमते हुए भी दिखाई पड़ रहे हैं।

आमजनों से अपील:–

कोरोना की दूसरी लहर में जो भयावह स्थिति बनी थी जिसमे कई राज्यों में मुर्दाघरों में लाशें ही लाशें रखी हुई थी, अस्पतालों में बेड नहीं थे, ऑक्सीजन की सप्लाई बाधित हो गई थी, दवाइयां नहीं मिल रही थी।कई लोग इस संक्रमण के कारण अपने को खो दिए।कोरोना वायरस का संक्रमण तब फैलता है जब कोई व्यक्ति संक्रमित मरीज के संपर्क में आता है। यानी संक्रमित व्यक्ति के खांसने, छींकने से उसकी छींक–खांसी के साथ ही कई वायरस हवा में चले जाते हैं और जब कोई दूसरा इसके संपर्क में आता है, तो उसके संक्रमित होने की आशंका बढ़ जाती है। ऐसे में इस वायरस से बचाव के लिए ज्योदा एहतियात की जरूरत है। अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति से उचित दूरी बनाए रखना बहुत जरूरी है। कोरोना काल में अगर आपके घर मेड आ रही है, तो भी सुरक्षा के नियमों का पालन करना जरूरी है। आप कुछ अहम बातों का ध्याग रखकर और सावधानियां सुरक्षित रह सकते हैं।

प्रशासन से अपील:–

बरही में बीते कई दिनों से प्रशासन की जांच भी धीमी पड़ी हुई है।निरंतर मास्क चेकिंग अभियान तथा जनजागरुकता कार्यक्रम जारी रखा जाए। सख्ती के साथ सड़को में आने–जाने वाले लोगो,ठेलो,दुकानों,बसो या अन्य जगहों पर से कोविड नियमो का अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए। वही बिना मास्क के पाए गए लोगों से जूर्माना या अन्य तरीके भी अपनाए जाने की जरूरत है। बसों और टैंपू में आवश्यकता से अधिक सवारी, बिना मास्क का प्रयोग सहित अन्य को. विड–19 प्रोटोकॉल के उल्लंघन को रोका जाए। बिना मास्क के व्यक्ति को चेकिंग दौरान मास्क भी उपलब्ध कराया जाए।

प्रबुद्धजनों से अपील:–

जिस प्रकार कोरोना कि तीसरी लहर की आशंका बनी हुई है यदि हम बरही के निवासी सजग और जागरूक नहीं बने तो हम कहीं ना कहीं इस तीसरी लहर को स्वयं दावत दे रहे हैं। हमारा सुंदर और स्वच्छ बरही को कोरोना की तीसरी लहर से बचाने के लिए सभी बुद्धिजीवी जिम्मेवार लोगों को एक बार पुनः आगे आना होगा और अपने परिवार तथा अपने बरही की जनता को सुरक्षित रखने में अपनी सहभागिता निभानी होगी। यदि हर एक व्यक्ति यह संकल्प ले ले कि हम बिना मास्क लगाए बाहर नहीं निकलेंगे तथा बिना मास्क लगाएं व्यक्ति को मास्क लगाने के लिए प्रेरित करेंगे। साथ ही साथ सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने को लेकर भी जागरूक करे तो हमारा बरही भविष्य में भी कोरोना की तीसरी लहर जैसी संभावनाओं से बचा रहेगा।

विधवा पेंशन के लिए वर्षो से कार्यालय का चक्कर लगा रही है कोरियाडीह की विधवा महिला रीता देवी

अपेम लाइवः चौपारण
धीरज कुमार प्रजापति

धीरज कुमार प्रजापति

चौपारण प्रखंड अंतर्गत यवनपुर पंचायत के कोरियाडीह गाँव की रहने वाली विधवा महिला रीता देवी पति स्व. टुकन प्रजापति अपने विधवा पेशंन के लिए कई वर्षो से भटक रही लेकिन उनको न ही स्थानीय जनप्रतिनिधि से कोई सहयोग मिला और न ही कोई प्रशास. निक पदाधिकारी के द्वारा। मसौमात रीता देवी का कहना है कि एक कमरा मे बच्चो के साथ जीवन जी रहे है। बरसात के समय मे पानी पुरा घर मे आ जाता है जिसके वजह से काफी

विधवा महिला रीता देवी अपने बच्चों के साथ

उनके पति का मृत्यु आठ वर्ष पहले हो गया था। तब से जैसे–तैसे मजदूरी करके अपने बच्चो का पालन पोषण किए। उसी समय से अपने विधवा पेशंन के लिए कई बार आवेदन दिए कई ला. गो से मिले लेकिन सिर्फ हमे आश्वसन के आलावा उनसे कुछ नही मिला। आज स्थिति इतना खराब हो गया है कि अपने परिवार के लिए एक समय का खाना तक का व्यवस्था नही कर पा रहे है। रहने के लिए आवास नही है मिट्टी का परेशानी होता है रात को सोते तक नही है। हमने प्रधानमंत्री आवाज योजना के लिए भी आवेदन किया था लेकिन आज तक हमे आवास भी नही मिल सका। मैं सरकार के प्रतिनिधि और अधिकारी से आग्राह करते है कि वो हमारा मदद करे जिससे हम अच्छा तरह से अपना जीवन जी सके। विडम्बना है कि आज भी कई विधवा महिलाओं का पेंशन नही मिल पा रहा है। आज भी विधवा पेंशन के लिए भटक रही हैं।

विश्व सर्प दिवस पर विशेष: आज जानिए करैत सर्प के बारे में,करैत सर्प के काटने पर क्या करें , क्या न करें।

सर्पदंश से घबराएं नही, झाडफूंक के चक्कर में समय बर्बाद न कर जल्द ही अस्पताल में करें भर्ती,

अपेम लाइवः बरही
रितेश कुमार
दिल्ली हाई कोर्ट

रितेश कुमार

सांप खलनायक नहीं हैं। इनके प्रति डर हमारे जीन में समाया हुआ है। सर्प को देखते ही दिमाग में मौत का भय हावी हो जाता है। जिसके प्रतिफल स्वरूप कोई भी सांप निकला तो हम उसे मारने का प्रयास करते हैं।

आज चर्चा करैत की: बारिश के दिनों में अक्सर सुनने में आता है कि जमीन पर सो रहे व्यक्ति को सांप ने काटा और काफी देर तक झाड़–फूंक कराने के बाद उसकी मौत हो गई। जमीन पर सोए व्यक्ति को रात में सांप काटने के मामले में करैत ही अधिकतर मामलों में जिम्मेवार होता है। अक्सर, करैत के काटने के स्थान पर बहुत कम या कोई दर्द नहीं होता है, जो पीड़ित को झूठा आश्वासन प्रदान कर सकता है कि उसे विषहीन सांप ने बाइट किया है।

यह निशाचर है। अमूमन दिन में शांत कहीं घुसकर रहता है। रात में सक्रिय होता है। जमीन पर सोए व्यक्ति के शरीर की गर्मी इसे आकर्षित करती है और यह व्यक्ति के सटकर रहता है। करवट बदलने पर बाइट करता है।

साइलेंट किलर :– करैत के विषदंत अन्य सांपों की अपेक्षा पतली और

ज्यादा नुकीले होते हैं। काटने होने पर ज्यादा तकलीफ नहीं होती और तुरंत खून भी बंद हो जाता है। दंश में सुई चुभने का एहसास होता है। दंश के बाद कई घंटों तक लक्षण नहीं उभरते। विष बिना कोई लक्षण दिखाएं अपना काम करता रहता है। विष शरीर में फैल जाने के बाद व्यक्ति में सर्प दंश का असर दिखता है, तब तक देर हो चुकी होती है। इसीलिए इससे साइलेंट किलर की संज्ञा दी गई है। विष की मात्रा कम होती है, लेकिन ज्यादा असरकारक है। नर्वस ब्रेकडाउन करने की क्षमता इसके विष में है। एग्रेसिव नहीं है।

इलाज : सबसे प्रभावी और विश्वसनीय इलाज एलोपैथ में एवीएस या एएसवी है। जिस अस्पताल उक्त इंजेक्शन मौजूद हो वहां जाना चाहिए। दंश होने पर बिना समय गंवाए मरीज को किसी वाहन में बिठाकर अस्पताल ले जाएं।

बारिश के दिनों में जमीन पर सोने से बचें। कमरे में सर्प के प्रवेश के आसार हो तो मच्छरदानी को अच्छी तरह बेड पर लगाने के बाद सोना चाहिए।

पहचान : इसका शरीर शाइनी ब्लैक और उस पर सफेद बैंड होते हैं बैंड की संख्या 45 से 50 हो सकती है। शरीर धूसर और चमकीला नहीं हो और उस पर 25 से 30 बैंड हो तो वह करैत नहीं बल्कि सांखड विषहीन है। फई सर्प करैत के जैसे दिखते हैं। लेकिन करैत नही होते हैं। इस वजह से लोग कभी कभी दूविधा में रह जाते हैं। चाहे जो हो जैसे ही सर्पदंश की बात सामने आती है। तुरंत अस्पताल का ही रूख करनी चाहिए। झाड फूंक के चक्कर में समय बर्बाद नही करनी चाहिए।

खबर का श्रोत:– मुरारी सिंह के फेसबुक वाल से, मुरारी सिंह सर्प एक्सपर्ट हैं

दैनिक भास्कर

एडिटिंग एवं पेज मेकिंग : कृष्णा प्रजापति

निर्देशन : डॉ अनिल कुमार एवं कपिल केशरी